रिकॉड़ः-धीरज धर मनवा....   ओम शान्तिः   30-5-67   प्रातः क्लास

तुम कहां वेठे हेा?इसको स्कूल अथवा यूनिवासिठी भी कह सकते है। विश्व विदयालय है नां। सारी दुनियां का यह एक ही विश्व विदयालय है जिनको ईश्वरिय ब्रांचिज है। वावा ने आकरबडी मे बडी यूनिवासिटी खेाली है। शास्त्रेा मे रुद्र यज्ञ नाम लिख दिया है। उस समय तुम जानते हेा कि शिव वावा ने यह पाठशाला खेाली है। वच्चे समझते है कि यह बडी से वडी यूनिवरसिटी है। ऊंच ते ऊंच वाप पढ़ाते है। यह तो वच्चेा की वुधी मे याद रहना चाहिये कि वाप हमको पढ़ाते है। उनका ही यह यज्ञ रचा हुआ है। इनका नाम भी वाला है। राजस्व अविनाशी रुद्र ज्ञान यज्ञ। राजस्व अर्थात स्वराज्य के लिये। अश्वमे ध। माना यह जो भी देह सहित देह के सम्बन्ध देखने मैं अाते है उनको हम इस यज्ञ मे स्वाहा कर रहे है। शरीर ही स्वाहा हेा सकता है। आत्मा तो स्वाहा हेा नही सकती। जब शरीर स्वाहा हेा जावेगा तब आत्मा भागेगी यह कै संगम युग। वहुत आत्माेय भागेगी। वाकी शरीर खत्म हेा जावेंगे। गवर्मेन्ट तो कही कहती है कि वहुत वच्चे पेदा करेा। कही कहती है कम पेदा करेा। यह है सब ड्रामा। तुम ड्रामा के वश हेाकर चल रहे हेा। वाप कहते है हमने यह राजस्व अश्व मेध यज्ञ रचा है। यह भी ड्रामा प्लान अनुसार ही रचा गया है। ऐसे नही कहूंगा कि मैने यज्ञ रचा है। नही। ड्रामा प्लान अनुसार तुम वच्चेा को पढ़ाने लियेकल्प पहले मुआफिक यज्ञ रचा गया है। मैने रचा है इसका भी अर्थ नही निकलता है। ड्रामा प्लान अनुसार रचा गया है। कल्प-2 रचा जाता है। यह ड्रामा बना हुआ है नां। ड्रामा प्लान अनुसार एक ही वार यह यज्ञ रचा जाता यह कोई नई वात नही है। अब वुधी मे वेठा है कि वेरावर 5000वर्ष पहले भी यज्ञ था।अब फिर चक्र रिपीट हेा रहा है। फिर से नई दुनियां की स्थापना हेा रही है। तुम नई दुनियां मैं स्वाराज्य पाने लिये पढ़ रहे हेा। पवित्र भी जरर बनना ही है। वनता भी वेा ही है जो कल्प पहले ड्रामा प्लान अनुसार वना था। अव भी बनेगा साक्षी हेाकर ड्रामा को देखना हेाता है।और फिर पुरुषार्थ भी कराना हेाता है। वच्चेा को मार्ग भी वताना है। मुख्य वात है पवित्रता की। वाप को वुलाते ही है कि आआ और हमको इस पतित छी-2 दुनियां सें ले जाओ। वाप आेय हा है दूर ले जाने। यह छी-2 दुनियां है। भक्ति मांग कोई भी वापस ले नही जा सकते है। ड्रामा मे है नही जेा कि कोई वापस ले जावे। यह सब शास्त्रेा मे गपेाडे है। वेा भी ड्रामा प्लान अनुसार ही नूंध है। फिर भी यह सब गपेाडे बनावेंगे। यह शास्त्र आद भी फिर बनेंगे। सतयुग त्रेता मे पुजा की कोई भी चीज हेाती ही नही। अब तो पुजा का कितना ढेर का ढेर सामान है। अब पता पडा है कि भक्ति मांग तब शुरु हेाता है जब कि रावण राज्य शुरु होता है। प्रआईन्टस तो वहुत दी जाती है जब तक कि कोई समझे। मुख्य वात फिर भी वाप कहते है मनमाभव। पावन वनने लिये वाप को याद करना है। यह भुलना नही है।वाप को जितना याद करेंगे उतना ही फायदा है। चॉर्ट रखना चाहिये। नही तो फिर पिछाडी मे फेल हेा जावेंगे। वच्चे समझते है कि हम ही सतोप्रधान थे। फिर हम ही अव तमेाप्रधान वने है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। जो ऊंच वनते है उनको मेहनत भी जास्ती करनी पडेगी। याद मे रहना पडेगा। यह तो समझते हो कि वाकी थेाडा समय है। फिर सुख के दिन आते है। वेरावर हमारे अथाह सुख के दिन आते है।वाप एक ही वार आते है दुःख धाम खलास कर सुख धाम की दुनियां में। तुम वच्चे समझते हो कि अभी हम ईश्वरिय परिवार मे है फिर दैवी परिवार मे हेागें। इस समय का ह गायन है। यह संगम का ही पुरुषेातम ऊंच ते ऊंच वनने का युग है। तुम वच्चे जानते हो कि अभी हम पुरुषेातम वन रहे है।हमको वेहद का वाप पढा रहे है। फिर सावधान भी कर रहे है। कहते है कि वच्चेा सावधान रहना है। माया के तूफान तो आवेंगे नां। विकार से बचना है। आगे चल कर सन्यासी लेाग भी मानेंगे। समय आवेगा नां। अभी तुम्हारा प्रभाव इतना नही निकला है। अभी राजधानी स्थापन हेा रही है। समय पडा है। पिछाडी को यही सन्यासी आद भी आकर समझेंगे। सृष्टी का चक्र कैसे फिरता है यह नालेज कोई पास भी नही है। यह भी वच्चे जानते है कि पवित्रता पर

समाचार लिरवते है। दोनो वाप इकठे है नां। रुहानी और जिस्मानी। तो कितनी रवुशी होनी चाहिये। 5000 वर्ष पहले की ही तरह हम वाबा से पत्र व्यवहार करते है। पतित को पावन वनाने आते होगें तो सभी एक जगह तो मिल नही सकते। जरुर कही आना जाना पड़ता होगा। पत्र व्यवहार करते होगें। अव तुम वच्चो की वुधी मे है। वच्चो की आपस मे कमेटी होनी चाहिये कि हम सर्विस को कैस वढ़ावे? अपना और अपने
* ************ ******** ******** **********
भारतवासियों का वेडा पार कैस करे? रावण ने सवका वेडा डुवो दिया है। अव सारे विश्व का वेडा पार करना है। तुम वच्चे वाप के मददगार होनां। वाप को वुलाया है, तो मदद देनी है नां। सारी दिन सारी रात यही तात रहनी चाहिये कि हम अन्धो की लाठी कैस वने। सव अन्धे है। हमारे सिवा कोई की चढ़ती कला नही है। वडे-2 पण्डित आद भल कितना भीडान पुण्य तीर्थ आद्र करते है। परन्तु नीचे उतरते ही जाते है। तुम्हारी अव चढ़ती कला है। औरो को भी समझाते रहते हो। अभीतुम्हारी वुधी मे है कि यहां जो भी देरवते है सवशान्ति धाम मे चले जावेंगें। वाद मे फिर सिर्फ तुम्हारा ह' धर्म होगा? तुम वच्चो को रवुशी ह होती है कि हम देवी देवता धर्म की स्थापना कर रहे है। अपना दैवी स्वराज्य स्थापन कर रहे है। आगे भी तुमेन किया था। फिर की रिपीट करते हो। अनेक वार स्वर्ग स्थापन किया है। रावण ने नर्क स्थापन किया है। यह भी वापने समझाया है कि दान करना चाहिये पात्र को। कक-2 कोईऐसे आते है जो कुछ भी नही समझते। विलकुल ही पत्थर वुधी है। उनके साथ तो वात करनी भी फालत है। दान सदेव पात्र को करना चाहिये। वावा झट समझ जाते है इसलिये उससे जास्ती माथा नही मारते है। भक्ति मार्ग मे गुरु लोग शिष्यों से प पकरिक्षा लेते थे। यह करो, यहा जाओ तो मालुम पडे कि यह देही-अभिमानी है। वो सव है भक्ति मार्ग। अव वाप कहते है हेयर नो ईवल। यह भक्ति मार्ग की वातें मत सुनो। यह भी वच्चा वाप ने समझाया है कि यह सारा श्रेष्ट रवण्ड था। अव सारे रवण्ड पर रावण राज्य है। उससमय। सतयुग मे राम राज्य था। राम र राज्य कैसे स्थापन होता है रावण राज्य कैस स्थापन होता है यह भी तुम जान गये हो। राम कोई रघुपती नही। रघुनाथ का भी मन्दिर है नां। कितेन मनुष्य जाते है। यह भी कोई नही जानते। कि रघुनाथ को काला क्यो दिरवाया है। तुम तो जानते हो नां। वाप रवुद कहते है कि मैरे सब वच्चे काम चिक्षा पर वैठ कर जल कर भस्म होते गये है। एकदम काले कोयले वन गये है। राज्य लेते है फिर गुवाते है। अव फिर काम चिक्षा से उतर कर ज्ञान चिक्षा पर वैठना है। वाप ने आर्डीनेन्स निकाला है कि काम महाशत्रु है। अव ज्ञान चिक्षा पर वैठो। फिर भी माया नाक से पकड कर काला मुंह करवा वैठती है। फिर कहते है वावा भूल हो गई है। लौकिक वाप भी कहेगें लाहनत है। तुम कुल का नाम वदनाम करते हो। गन्दा काम करने वाले सजा तो वहुत रवावेंगें नां। रवुदभी समझते है कि हम इस हालत मे लक्ष्मी को कैसे वर सकते है। अन्दर मे दिल तो रवाती रहेगी नां कि हमेन काला मुहं किया है। वावा को पता पडे नही पडे। सजा तो रवुद ही रवावेंगें। पद भ्रष्ट तो अपना करते है नां। देवी गुण पुरे धारन करने है। अपने को देरवना है कि कितनो को रास्ता वताया। वावा का मददगार पुरा वना हूं वा नही। रोज अपना पोतामेल निकालना चाहिये। जितना
** ****** ********* ****
वाप को याद करेंगें वहुतो को आप समान वनावेंगें तो जमा होता जावेगा। सच्चे वाप दवारा सच्ची ही कमाई करते हो वही साथ मे जावेगा। वाकी तो सव रवत्म हो जाना है। तुम्ही जानते हो कि हम नई दुनियां मे जाते है। और कोई मनुष्य समझ नही सके सिवाय तुम्हारे। तुम जानते हो किहम ज्ञान और योग की कमाई करते है जिससेस हम ऐवर हेल्दी औी ऐवर वेल्दी वनेंगें। हेल्थ ऐंड वेल्थ है तो हेप्पी भी है। सुन्दरता हैपेसा नही होता है तोसुरव हो नही सकता है। तुम सिर्फ वाप को याद करो तो ऐवर हेल्दीवन जावेंगें। यह याद करना है और दिलाना है। अन्धो की लाठी वनना है। वेज भी हमेशा साथ मे रवो। पूंछे यह फिर कौनसी नई संस्था है। वोलो यह तो ईश्वरिय मिशन है। शिव वावा ब्रहमा दवारा कहते है कि तुम मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जावेंगें। और तुम यह वनेंगें। कोई भी देहधारी को याद नही करना है। पहले अव्यभचारी भक्ति की थी अव अव्यभचारी याद्र मे रहो। अव्यभचारी याद ही अव सिरवाते है। पूज्य वनाता हूं। पुजारी पुजा करते ह। पुज्य वनने लिये सिफ याद करना है। रवाद निकलेगी याद से ही। ओम